

आसनसोल लोकसभा में अब तक नहीं खिला जोड़ाफूल

गंतव्य कोलकाता ब्यूरो : लगातार 26 वर्षों तक कांग्रेस की राजनीति करने के पश्चात ममता बनर्जी ने 1 जनवरी 1998 को तृणमूल कांग्रेस का गठन किये जाने से लेकर अब तक आसनसोल लोकसभा क्षेत्र से 6 बार चुनाव लड़ा, और हर बार प्रतिद्वंद्विता में रहने के बावजूद अब तक तृणमूल अपने जीत का परचम नहीं लहरा पायी है। वर्ष 1998 में हुए संसदीय चुनाव में पार्टी ने अजीत कुमार घटक उर्फ मलय घटक को उम्मीदवार बनाया। पहली ही चुनाव में पार्टी मुख्य प्रतिस्पर्धा में आने के बावजूद उसे जीत नहीं मिली। माकपा के विकास चौधरी ने घटक को 26 हजार से भी

अधिक मतों से पराजित किया। कुल 12 लाख 42 हजार 690 मतदाताओं में से 70.87 फीसद यानी 8 लाख 80 हजार 747 मतदाताओं ने मतदान किया। माकपा को 3 लाख 55 हजार 382 वहीं घटक को 3 लाख 29 हजार 233 मत मिले थे। इसके अलावा तीसरे स्थान प्राप्त करने वाली कांग्रेस को 1 लाख 10 हजार 618 मतों पर ही संतोष करना पड़ा था। वर्ष 1999 में हुए मध्यावधि चुनाव में आसनसोल संसदीय क्षेत्र से तृणमूल कांग्रेस ने दूसरी बार फिर मलय घटक को ही अपना उम्मीदवार बनाया लेकिन जीत फिर भी नहीं मिली। इसके उलट जीत

का अंतर और भी बढ़ गया। इस बार कुल मतदाता 12 लाख 65 हजार 330 मतदाताओं में से 65.52 फीसद यानी 8 लाख 29 हजार 147 मतदाताओं ने मतदान किए जिसमें माकपा के विकास चौधरी को 3 लाख 77 हजार 265 मत मिले और मलय घटक को 3 लाख 39 हजार 401 मत ही मिले। इस बार जीत का अंतर 26 हजार से बढ़कर 38 हजार पर पहुंच गया। वर्ष 2004 में हुए संसदीय चुनाव में तृणमूल कांग्रेस ने फिर से मलय घटक पर ही अपना दाव लगाया और इस आर भी उनका टक्कर माकपा के उम्मीदवार विकास चौधरी

से ही हुई। इस बार कुल मतदाताओं की संख्या 10 लाख 92 हजार 141 मतदाताओं में से 66.40 फीसद यानी 7 लाख 25 हजार 198 मतदाताओं ने मतदान किया। चौधरी को 3 लाख 69 हजार 832 मत मिले, जबकि घटक को 2 लाख 45 हजार 514 मत मिले थे। इस चुनाव में घटक को सावा लाख से भी अधिक मतों से पराजय का सामना करना पड़ा। अगस्त 2005 को सांसद चौधरी की मौत हो गयी जिसके कारण मध्यावधि चुनाव हुआ और मध्यावधि चुनाव में तृणमूल कांग्रेस ने पुनः मलय घटक को ही अपना उम्मीदवार बनाया जबकि माकपा ने

राज्य सरकार के तत्कालीन मंत्री बंशोगोपाल चौधरी को अपना उम्मीदवार बनाया जिसमें कुल 6 लाख 69 हजार 740 मतदाताओं ने मतदान किया। सहानुभूति के आधार पर माकपा ने तृणमूल को 2 लाख 30 हजार से भी अधिक मतों के अंतर से पराजित किया। माकपा को 4 लाख 10 हजार 740 मत तथा तृणमूल को 1 लाख 80 हजार 799 वोट मिले। वर्ष 2009 में हुए संसदीय चुनाव में तृणमूल ने फिर से मलय घटक को ही अपना उम्मीदवार बनाया, जबकि माकपा ने पुनः वंशोगोपाल को ही चुनावी

शेष पृष्ठ 3 पर

जीआरएसई ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2019 की घोषणा की



(पीआईबी)न्यूज : गार्डन रीच (सेवानिवृत्त), अध्यक्ष और प्रबंध शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड ने अपने सभी महिला कर्मचारियों के साथ अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2019 मनाया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रियर एडमिरल वी के सक्सेना, आईएन

शेष पृष्ठ 3 पर

पोल खोल



चुनाव मैदान में उतरी अभिनेत्री मुनमुन सेन

मां कल्याणेश्वरी मंदिर में पूजा-अर्चना कर अभिनेत्री का चुनाव प्रचार अभियान शुरू



गंतव्य संवाददाता (आसनसोल) : आसनसोल लोकसभा सीट से तृणमूल कांग्रेस प्रत्याशी सह बांकुड़ा की सांसद व अभिनेत्री मुनमुन सेन ने रविवार से अपना चुनाव प्रचार अभियान शुरू किए जाने के तहत सर्वप्रथम कल्याणेश्वरी मंदिर में पूजा-अर्चना कर मां से आर्शिवाद लेकर वह चुनाव मैदान में उतरी। कोलकाता से सड़क मार्ग से सबसे पहले वह निंघा मोड़ स्थित एक निजी होटल पहुंची जहां कुछ देर विश्राम के बाद कल्याणेश्वरी

दर्शन की तत्पश्चात आसनसोल पहुंची। तृणमूल प्रार्थी मुनमुन सेन को साथ लेकर टीएमसी जिला कमेटी द्वारा शहर में जूलूस निकालकर शक्तिप्रदर्शन किया गया। इस दौरान टीएमसी के तमाम गुटों के नेता एकजुट होकर जुलूस में शामिल हुए। आश्रम मोड़ से जुलूस शुरू होकर जीटी रोड होते हुए गिरजा मोड़ पहुंचकर सभा में तब्दील हुआ। जुलूस के रास्ते में मुनमुन सेन ने कभी रिकसा तो कभी ऑटो की सवारी की।

सभा के संबोधन में मुनमुन सेन ने कहा कि वो आसनसोल के हर गली एवं मुहल्ले में जाएंगी। इस सभा में राज्य के श्रम व कानून मंत्री मलय घटक, जिलाध्यक्ष वी.शिवदासन दासू, एमएमआईसी अभिजीत घटक एडीडीए चेयरमैन तापस बनर्जी, मेयर जितेंद्र तिवारी उपस्थित थे। वहीं इस कार्यक्रम से कुल्दी के तृणमूल विधायक सह एडीडीए के वाइस चेयरमैन उज्जवल चटर्जी व कुल्दी ब्लॉक तृणमूल के अध्यक्ष महेश्वर मुखर्जी जैसे कद्दावर नेता के नदरत रहने से लोग इसे पार्टी का गुटबाजी से जोड़कर देख रहे हैं। वहीं ब्लॉक अध्यक्ष ने सफाई में कहा है कि उन्होंने पार्टी द्वारा अधिकृत तौर पर जानकारी नहीं दी गयी थी। प्रार्थी में हताशा की चर्चा भी हो रही है।

भारतीय राजनीति में दुर्लभ हैं मनोहर पार्रिकर जैसे राजनेता

गंतव्य गोवा संवाद : पिछले एक साल से एडवांस्ड पैक्रियाटिक कैंसर से जूझ रहे भारतीय राजनीति के स्वच्छ व्यक्तित्व वाले मनोहर पार्रिकर का रविवार की शाम निधन हो गया। रविवार को ही मुख्यमंत्री कार्यालय ने ट्वीट किया था कि पार्रिकर की हालत बेहद नाजुक है और उन्हें डॉक्टरों की गहन निगरानी में रखा गया है। इसके बाद पार्रिकर के आवास पर उनके समर्थकों और पार्टी कार्यकर्ताओं का जमावड़ा लगने लगा। रविवार की रात करीब 8.25 बजे उनकी निधन की घोषणा की गयी। उनके निधन की खबर फैलते ही पार्टी कार्यकर्ता और उनके समर्थक निराश हो गए। सोमवार को केंद्रीय मंत्रीमंडल की बैठक में पार्रिकर को श्रद्धांजली दी गयी। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने पार्रिकर के निधन पर



गहरा शोक जताते हुए अपने ट्वीट में कहा कि सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी और निष्ठा के एक प्रतिक के रूप में गोवा और भारत के लोगों के लिए उनकी सेवा को भुलाया नहीं जा सकता है। पार्रिकर केंद्रीय रक्षा मंत्री के पद से मार्च 2017 में इस्तीफा दे चौथी बार गोवा के मुख्यमंत्री बनकर अपने गृह राज्य लौट गए थे। उन्होंने एक टीवी चैनल से एकबार कहा था, "मैं अपनी जिंदगी के अंतीम 10

साल खुद के लिए जीना चाहता हूँ। मैंने राज्य काफी कुछ वापस दिया है और मैं इस कार्यकाल के बाद मैं चुनाव लड़ने या चुनाव का हिस्सा नहीं बनूंगा, चाहे पार्टी की ओर से कितना ही दबाव आये।" लेकिन पार्रिकर की ये ख्वाहिश अधूरी ही रह गई और सोमवार शाम पांच बजे उनका अंतिम संस्कार किया गया। देश के रक्षा मंत्री के रूप में उन्होंने सबसे पहले रक्षा सामानों की खरीद प्रक्रिया को आसान बनाने का काम किया। प्रधानमंत्री मोदी के आग्रह पर ही वे मुख्यमंत्री पद छोड़कर केंद्रीय कैबिनेट का हिस्सा बने थे क्योंकि पार्रिकर ही एक कट्टर राष्ट्रवादी भूमिका के लिए फिट थे। जब तक वो ज़िंदा रहे एक बात तो साफ थी कि उनकी जगह कोई नहीं ले पाया।

सभ्य लोकतंत्र में हिंसा एक चुनौती

किसी भी सभ्य समाज में हिंसा की कोई जगह नहीं होनी चाहिए। लेकिन लोकतांत्रिक गणराज्य होने के बावजूद हमारे यहां जाति, धर्म, समुदाय, भाषा, क्षेत्रीयता आदि के मसलों पर अक्सर लोग हिंसक हो उठते हैं। कभी-कभी तो मामूली अफवाहों के चलते तो अक्सर हिंसा की घटनाएँ होती रहती हैं, और जब बात देशप्रेम की हो, तो लोग कुछ ज्यादा ही आक्रामक रूप अपना लेते हैं। पुलवामा में सीआरपीएफ के काफिले पर हुए हमले के बाद भी देश में कुछ ऐसा ही माहौल बन गया। कश्मीरी लोगों पर हमले शुरू हो गए। मैदानी इलाकों में पढ़ रहे बच्चों के साथ न सिर्फ उनके सहपाठियों ने बदसलूकी की, बल्कि संस्थानों के प्रशासन का व्यवहार भी आपत्तिजनक देखा गया। कई शहरों में व्यापार कर रहे लोगों की दुकानों में तोड़-फोड़ की गयी। जिसके पश्चात केंद्रीय गृह मंत्रालय को सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को परामर्श जारी करना पड़ा कि वे कश्मीरी लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करें। इतना ही नहीं प्रधानमंत्री ने भी एक सार्वजनिक मंच से ऐसी घटनाओं पर अफसोस जाहिर करते हुए इनपर रोक लगाने की अपील करनी पड़ी। हालांकि कश्मीर में आतंकवाद निशेध बड़ी समस्या है, जिसमें कई गुमराह कश्मीरी नौजवान भी आतंकी संगठनों के झांसे में आ जाते हैं। परंतु इसका अर्थ कतई नहीं लगाया जा सकता कि इसके लिए सभी कश्मीरियों को अपमानित किया जाय, उनके साथ हिंसक बर्ताव किया जाय। देश जिन शहरों में कश्मीरी लोगों पर हमले हुए वे खुद कश्मीर की हालात के सताए हुए हैं। वे इसलिए कश्मीर छोड़कर दूसरे शहरों में गए हैं कि थोड़े बेहतर हालात में जीवन बसर कर सकें। कुछ कमा सकें, अपने बच्चों की परवरिश कुछ बेहतर तरीके से कर सकें, लेकिन हैरानी की

बात है कि लोगों में सोचने समझने की क्षमता, उनका विवेक ऐसी स्थितियों में कहां खो जाती है कि थोड़ा धैर्य रखकर तर्क करना भी जरूरी नहीं समझते। वैसे देखा जाय तो सभी इस पक्ष में खड़े दिखते हैं कि कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा है, पर जब लोग कश्मीरियों पर हमले करने उतरे, तो वे तर्क क्यों नहीं कर पाये कि अगर कश्मीर हमारा है, तो कश्मीरियों को पराया कैसे मान लें। हालांकि ऐसी घटनाएँ पहले भी अनेकों बार हो चुकी हैं, जब लोग विवेकशून्य होकर हमलावर भीड़ में तब्दील हो जाते हैं। चाहे वह पूर्व प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की हत्या के पश्चात सिख लोगों पर हुए हिंसक हमले हों, चाहे वह आसाम में हिंदी भाषियों पर हमला रहा हो या मुम्बई में बाहरी लोगों पर हिंसक हमलें हों, सब इसी विवेकहीनता की वजह से घटित हुए हैं। एक गणराज्य में किसी भी नागरिक को कहीं भी जाकर बसने, काम करने का अधिकार होता है। लेकिन धारा 370 आम नागरिकों को कश्मीर से अलग कर दिया है, भले ही ये राजनीतिक फायदे के लिए किया गया हो लेकिन फिर भी उसे उसकी भाषा, जाति, समुदाय, धर्म के आधार पर सभ्य समाज में अलग-थलग नहीं किया जा सकता। मगर जैसे कुछ लोग इसी ताक में रहते हैं कि उन्हें हिंसा करने का मौका मिले और वे करें। वहीं ऐसी हिंसक प्रवृत्ति का फायदा कुछ संकीर्ण स्वार्थी वाले शरारती लोग। वही उकसाते, कोई अफवाह फैलाते हैं और फिर हिंसा का सिलसिला शुरू हो जाता है। ऐसे में गृहमंत्रालय के परामर्श पर राज्य सरकारें कितनी गंभीरता से अमल करेंगी, यह देखने की बात है। जबतक राजनीतिक इच्छाशक्ति दृढ़ नहीं होगी, ऐसी चुनौती बनी रहेगी।

राजेंद्र नाथ झा संपादकीय

लंबे समय से काबिज जोड़ी को फिर मिली कमान

डॉ. जी संजीवा रेड्डी इंटक के फिर अध्यक्ष वहीं राजेंद्र प्रसाद सिंह फिर महामंत्री बने। दोनों की जुगल जोड़ी लंबे समय से इंटक पर काबिज रही है। रायपुर में रविवार को जनरल काउंसिल की बैठक में एक बार फिर दोनों को अहम जिम्मेदारी दी गई। नब्बे वर्षीय पूर्व सांसद डॉ. संजीवा रेड्डी को इंटक की फिर से कमान सौंप दी गयी है। देश के बड़े मजदूर संगठन इंटक का दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन रायपुर में कई अहम प्रस्तावों के साथ संपन्न हुआ। राष्ट्रीय कार्यकारिणी के लिए आयोजित चुनाव में अध्यक्ष पद के लिए संजीवा रेड्डी के नाम का प्रस्ताव राजेंद्र प्रसाद सिंह ने लाया, वहीं महामंत्री पद के लिए राजेंद्र प्रसाद सिंह का प्रस्ताव संजीवा रेड्डी ने लाया। पूरे सदन ने ध्वनी मत से इसे पारित किया। चुनाव में देश भर के विभिन्न राज्यों से इंटक से संबद्ध विभिन्न यूनियनों के लगभग डेढ़

हजार डेलिगेट शामिल हुए। इस मोके पर राष्ट्रीय कार्यकारिणी कमेटी की घोषणा भी की गयी। उपाध्यक्ष अशोक सिंह, श्री नायर, आरसी खुटीया, आर चंद्रशेखरन चंद्र प्रकाश यादव, संजय कुमार सिंह बने हैं। वरीय सचिव आर डी त्रिपाठी, सुभाष मिश्रा, अमित यादव, राकेश्वर पांडे, सचिव कुमार जय मंडल सिंह, ओपी लाल, डॉ सरफराज अहमद, शिव कुमार, चंडी बनर्जी, पीएन शुक्ला, दशरथ, संगठन मंत्री श्यामल कुमार सरकार, कार्यकारिणी सदस्यों में केसी पंत, तपन चक्रवर्ती, सतीस कुमार सिंह आदि बनाये गए। अधिवेशन के दूसरे दिन कई अहम प्रस्ताव लाये गए, जिसमें केंद्र की मोदी सरकार को मजदूर व उद्योग विरोधी करार देते हुए हर हाल में उखाड़ फेंकने, सभी मजदूरों का न्यूनतम वेतन मंहगाई को देखते हुए कम से कम 50 हजार करने की मांग शामिल रही।

आचार संहिता क्या होती है और क्या है इसके नियम? इससे जुड़ी महत्वपूर्ण बातें राजनीतिक दलों और राजनेताओं को मानने पड़ते हैं आचार संहिता के ये नियम।

रविवार शाम को आगामी लोकसभा चुनाव 2019 की तारीखों का ऐलान होने के साथ ही लागू हो गई आदर्श आचार संहिता भी। यानि बज चुका है चुनावी बिगुल। ज्ञात रहे कि चुनावी शेड्यूल के साथ-साथ देश में अब आचार संहिता भी लागू हो गई है, लेकिन कितने लोग इस बात को जानते हैं कि आचार संहिता क्या होती है? आचार संहिता क्यों लागू होती है? आचार संहिता के नियम क्या हैं? और ये कब से कब तक लागू रहेगी? इन कई सवालों के जवाब मिलने पर आप इसके बारे में समझ जाएंगे। आचार संहिता चुनाव की तारीखों की घोषणा के साथ ही लागू हो जाती है, लिहाजा रविवार को चुनाव आयोग की प्रेसवार्ता के साथ ही देश में होने वाली लोकसभा चुनाव 2019 के मद्देनजर आचार संहिता लागू हो गई है। आचार संहिता चुनाव प्रक्रिया संपन्न होने तक लागू रहती है। यानि की चुनाव की तारीखों की घोषणा के साथ ही आचार संहिता देश



में लागू हो जाती है और वोटों की गिनती होने तक कि मतगणना तक जारी रहती है। इसबार आम चुनाव की गिनती 23 मई 2019 को होगी। लिहाजा आचार संहिता 10 मार्च से शुरू होकर 23 मई, 2019 तक जारी रहेगी। आचार संहिता लागू होने के बाद तमाम नियम भी लागू हो जाते हैं जिनकी अवहेलना कोई भी राजनीतिक दल या राजनेता नहीं कर सकता है। सार्वजनिक धन का इस्तेमाल किसी ऐसे कार्य में नहीं होगा जिससे किसी विशेष राजनीतिक दल या राजनेता को फायदा हो। सरकारी गाड़ी, सरकारी विमान या सरकारी बंगले का इस्तेमाल चुनाव प्रचार के लिए नहीं होगा। किसी भी तरह की

सरकारी घोषणाएँ, लोकार्पण, शिलान्यास नहीं होगा। किसी भी राजनीतिक दल, प्रत्याशी, राजनेता या समर्थकों को कोई रैली करनी हो तो उसकी इजाजत पहले पुलिस से लेनी होगी। किसी भी रैली में धर्म के नाम पर वोट नहीं मांगे जाएंगे। ज्ञात रहे कि आचार संहिता के नियम सख्ती से लागू होते हैं और अगर इन नियमों का उल्लंघन किया जाता है तो उसके लिए सजा का प्रावधान भी है। इसके लिए दंडात्मक कार्रवाई की जा सकती है। चुनाव आचार संहिता का असर सरकारी कामकाज पर नज़र आने लगा है। विद्युत कंपनियों में प्रशासकीय कमेटी का गठन, नियमितीकरण एवं कर्मियों के पद रि-स्ट्रक्चर नहीं हो पाएंगे। कर्मियों को अब आचार संहिता खत्म होने यानी तीन माह तक इंतजार करना होगा। आचार संहिता लागू हो जाने की वजह से सरकार कोई नया फैसला नहीं ले पायेगी। तीन महीने इंतजार करने होंगे।

ड्रोन से रेकी करते संदिग्ध चीनी जासूस गिरफ्तार

गंतव्य कोल ब्यूरो: पाकिस्तान की नापाक कार्रवातों में अंतरराष्ट्रीय मंच पर साथ देने वाला चीन अब भारत की सीमाओं के साथ-साथ भारत में स्थित सैन्य प्रतिष्ठानों की निगरानी करने की गुप्त कोशिशों में लगा है। चीन की खुफिया एजेंसी के लोग भारत में प्रवेश कर ड्रोन की मदद से इलाके की रेकी कर रहे हैं। कोलकाता पुलिस के हाथों एक ऐसा ही चीनी जासूस गिरफ्तार हुआ है जो कोलकाता में पूर्वी सैन्य कमान के मुख्यालय फोर्ट विलियम की ड्रोन के जरिए रेकी कर रहा था। यह घटना रविवार की सुबह फोर्ट विलियम के पास की है। गिरफ्तार किए गए अभियुक्त की पहचान चिन की राजधानी बिजिंग के रहने वाले ली झिवि के रूप में हुई है। गिरफ्तार अभियुक्त को रविवार को बैंकशॉल कोर्ट में पेश किया गया जहाँ से अदालत ने उसे 25 मार्च तक के लिए पुलिस हिरासत में भेज दिया है। कोर्ट



में मामले की सुनवाई कर रहे न्यायाधीश से झिवि के वकील ने जमानत देने की मांग करते हुए कहा कि झिवि चूँकि भारतीय नागरिक नहीं है और इसी कारण उसे इस बात की जानकारी नहीं थी कि भारत में बैर इजाजत के ड्रोन उड़ाना कानूनन जुर्म है। न्यायाधीश ने कहा कि चूँकि यह मामला देश की सुरक्षा से जुड़ा है और सैन्य ठिकाने के पास ड्रोन का इस्तेमाल किया जा रहा था ऐसे में पुलिसिया पूछताछ के लिए समय देना होगा। वहीं पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक झिवि शनिवार को चीन से मलेशिया होते हुए कोलकाता आया था। मिलि जानकारी के मुताबिक रविवार की सुबह फोर्ट विलियम के सामने ड्रोन उड़ा रहा था

तभी फोर्ट विलियम के गेट पर तैनात सेना के जवानों की नज़र उस ड्रोन पर पड़ी। सेना के जवानों ने झिवि को हिरासत में लिया और ड्रोन को जब्त कर लिया। जिसके पश्चात घटना की सूचना हेस्टिंग्स थाने की पुलिस को दी गई और पुलिस वहां पहुंचकर झिवि को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में पुलिस को झिवि के पास से कुछ ऐसे तथ्य मिले जिसे सुनकर पुलिस भी चौक गयी। घटना की सूचना मिलने के पश्चात लालबाजार से पुलिस अधिकारियों का एक विशेष दल थाने पहुंचा और गिरफ्तार संदिग्ध चीनी जासूस से मैराथन पूछताछ कर यह जानने की प्रयास में जुटी है कि आखिर ड्रोन से सैन्य प्रतिष्ठान फोर्ट विलियम की तस्वीरें लेने के पीछे उसका मकसद क्या है और वह किस मिशन के लिए ऐसा कर रहा था। पुलिस अधिकारियों का जांच दल तब तक जाने की कोशिश में है।

आसान नहीं बंगाल में शांतिपूर्ण मतदान करना

गंतव्य दुर्गापुर/आसनसोल: राज्य में शांतिपूर्ण व निष्पक्ष चुनाव कराना आसान नहीं है। अक्सर चुनाव आयोग के साथ सरकार व सत्तारूढ़ दल के टकराव की स्थिति पैदा हो जाती है। चुनाव आयोग जब राज्य में शांतिपूर्ण व निष्पक्ष चुनाव कराने का प्रयास करता है तो उसे कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वाममोर्चा के समय जो समस्याएँ थीं और अब तृणमूल के समय भी वही समस्याएँ लगातार जारी हैं। चुनाव में खूनी खेल का इतिहास

पुराना है। शायद ही कोई चुनाव हो, जिसमें हत्याएँ व हिंसा नहीं होती हो। यही वजह है कि राज्य के नाम चुनावी हिंसा और धांधली का रिकार्ड है। इस बार भी सत्तारूढ़ दल तृणमूल कांग्रेस नेतृत्व और मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने जिस तरह राज्य में सात चरणों में चुनाव कराने पर तीखा प्रहार किया है, उससे नहीं लगता है कि आयोग की राह आसान होगी। हालांकि आयोग अन्य राज्यों की तरह पश्चिम बंगाल में भी शांतिपूर्ण व निष्पक्ष चुनाव कराने की दिशा में काम कर

रहा है, लेकिन सत्तारूढ़ दल तृणमूल कांग्रेस ने जिस तरह कड़ा रुख अपनाया है उससे चुनाव आयोग के समक्ष चुनौतियाँ खड़ी हो गई हैं। चुनाव के समय राज्य में तनावपूर्ण माहौल होना आम बात है। पिछले वर्ष ही पंचायत चुनाव में जमकर हिंसा हुई थी जिसमें 13 लोग मारे गए थे। आतंक और हिंसा के कारण ग्राम बांग्ला के कुछ भागों में तो ग्रामीणों को घर छोड़कर अन्यत्र शरण लेनी पड़ी थी। वहीं वाममोर्चा के एक उम्मीदवार को जलाकर मार

तृणमूल कांग्रेस के दो गुटों में झड़प, तीन लोग घायल

गंतव्य संसू (बर्द्धमान) : लोकसभा चुनाव का शुभारंभ के साथ ही तृणमूल कांग्रेस की गुटबाजी भी उभरकर बाहर आने लगी है। रविवार की रात शहर के 16 नंबर वार्ड अंतर्गत मीरछोवा इलाके में तृणमूल के दो गुटों में संघर्ष के दौरान तीन समर्थक घायल हो गए। तीनों घायलों को बर्द्धमान मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहीं एक व्यक्ति की स्थिति गंभीर होने के कारण उसे कोलकाता स्थानांतरित कर दिया गया। सूचना पाकर इलाके में भारी पुलिस बल के साथ ही रैप उतारा गया था। सूत्रों के अनुसार रविवार की रात तृणमूल छात्र परिषद के शहर अध्यक्ष रासबिहारी हलदर के समर्थक दीवार लेखन का काम पूरा कर वापस लौट रहे थे उसी

पृष्ठ 1 का शेष आसनसोल लोकसभा में अब....

मैदान में उतारा। इस बार कुल 8 लाख 93 हजार 704 मतदाताओं ने मतदान किया। जिसमें माकपा को 4 लाख 35 हजार 161 वोट व तृणमूल को 3 लाख 62 हजार 205 वोट मिले। तृणमूल कांग्रेस को करीब 77 हजार मतों के अंतर से पराजय मिली। वहीं वर्ष 2014 में मलय घटक राज्य सरकार में मंत्री थे। इस बार तृणमूल नेत्री ममता बनर्जी ने श्रमिक नेत्री दोला सेन को आसनसोल संसदीय क्षेत्र से अपना उम्मीदवार बनाया। वहीं भाजपा ने नरेंद्र दामोदर दास मोदी की चल रही सुनामी में पार्श्वगायक बाबुल सुप्रियो को अपना उम्मीदवार बनाया, वहीं दूसरी ओर

पृष्ठ 1 का शेष जीआरएसई ने अंतरराष्ट्रीय महिला.....

प्रबंधन भी उपस्थित थे। डॉ रीना रामचंद्रन, पूर्व सीएमडी एचओसीएल लिमिटेड और संस्थापक अध्यक्ष विपस एपेक्स सहित दो प्रख्यात वक्ताओं ने सभा को संबोधित किया और "कैरियर सफलता के लिए प्रबंध चुनौतियाँ" पर अपनी अंतरदृष्टि साझा की। सुश्री सिमी सूरी, व्यवहार विशेषज्ञ ने "अध्यात्मिक संगठन बनाने" पर बल दिया। शिपयार्ड की महिला कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत किए गए कार्यक्रम "बैलेंस फॉर बेटर" विषय पर एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने उक्त रंगरंग कार्यक्रम का भरपूर आनंद उठाया।

तृणमूल में बढ़ते असंतोष से भाजपा को फायदा

गंतव्य, आसनसोल : लोकसभा चुनाव के पहले बंगाल में मुश्किल दिखने वाली भाजपा की इंद्री अब धिरे-धिरे आसान हो रही है। तृणमूल कांग्रेस नेताओं में लगातार असंतोष बढ़ता ही जा रहा है। भाजपा ममता की पार्टी में लगातार सेंध लगा रही है। इसकी शुरुआत मुकुल राय ने की थी। चुनाव से ऐन पहले मुकुल राय ने ममता का साथ छोड़ भाजपा का दामन थाम लिया था। हालांकि वो ममता के काफी करीबी होने के बाद भी उनसे दूरी बना ली। उन्हें तृणमूल में ममता बनर्जी के बाद दूसरा स्थान प्राप्त था। कुल मिलाकर उम्मीदवारों की घोषणा के साथ ही तृणमूल कांग्रेस में उठ रहे विरोध के स्वर से भाजपा अपने को मजबूत स्थिती में लाती जा रही है। ताजा हालात यह है कि लोकसभा चुनाव के लिए तृणमूल कांग्रेस अपने 42

उम्मीदवारों का नाम घोषित कर दी जिसके पश्चात तृणमूल शिविर में आक्रोश फैल गया। पार्टी ने अपने दस सांसदों का टिकट काट दिया है इसके साथ ही 18 नए चेहरों को मौका भी दिया गया है। कूचबिहार, बारासात, झारग्राम, मेदिनीपुर, बोलपुर, विष्णुपुर व कृष्णोनगर। इन सीटों पर भाजपा करीब पांच साल से भाजपा अपनी पैठ बनाने में लगी है। काफी हद तक तृणमूल के अंदरूनी कलह के कारण भाजपा को इसमें सफलता मिल रही है। तृणमूल के कद्दावर नेता अर्जुन सिंह ने भाजपा का दामन थाम लिया है। अजुन सिंह बैरकपुर लोकसभा सीट से भाजपा के प्रत्याशी होंगे। यह क्षेत्र मुख्य रूप से हिन्दी भाषी लोगों का वर्चस्व वाला है। अर्जुन सिंह का प्रभाव चार नगर पालिका समेत आठ विधानसभा तक है।

दुर्गापुर में बनेगी आधुनिक बस टर्मिनस एडीडीए के माध्यम से परिवहन विभाग को निर्माण की स्वीकृति



गंतव्य कार्यालय : काफी दिनों से चर्चा थी कि दुर्गापुर में भी अंतरराष्ट्रीय बस टर्मिनस के निर्माण किया जाएगा। जिसे लेकर राज्य परिवहन विभाग ने आसनसोल दुर्गापुर विकास प्राधिकरण के माध्यम से निर्माण किए जाने का निर्णय ले लिया है। इसके तहत एडीडीए एक नामी संस्था से डीपीआर तैयार करवायेगा। एडीडीए चेयरमैन तापस बनर्जी ने कहा कि डीपीएल 7 नंबर गेट के पास 814 एकड़ जमीन पर लगभग 150 करोड़ की लागत से अत्याधुनिक स्तर पर बस टर्मिनस बनेगा। पूरी जमीन एडीडीए की ही है। यात्रियों की सुविधा के मद्देनजर यहां हर तरह की ढांचागत सुविधा उपलब्ध होंगी। परिवहन विभाग से अनुमति मिलने के बाद शीघ्र ही बस टर्मिनस निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो जायेगी। विभागीय अधिकारियों ने जमीन का मुआयना भी किया है। वहीं दूसरी तरफ आसनसोल के कालीपहाड़ी में भी आधुनिक स्तर का बस टर्मिनस बन रहा है जिसके निर्माण का कार्य लगभग अंतिम चरण में है। इसके चालु होने के पश्चात सभी बसों का ठहराव

यहीं होगा। अब दुर्गापुर में भी बस टर्मिनस की खबर मिलने से लागणों में खुशी है। इस बस स्टैंड पर राज्य परिवहन संस्था की बसों के अलावा, भोल्लो मिनी समेत सभी बसें खड़ी होंगी। स्थानीय लोगों के अनुसार दुर्गापुर से धर्मतल्ला, करुणामया, मालदह, मुर्शिदाबाद, बांकुड़ा, पुरुलिया, नदिया समेत विभिन्न जिलों के लिए बसें खुलती हैं। स्टेशन के सामने से विभिन्न रूटों की बसें खुलती है अस बस स्टैंड के संबंध में यात्रियों की भारी नाराजगी है। जगह की कमी के कारण जहां-तहां बसें खड़ी कर दी जाती हैं जिससे बाहर से आने वाले यात्रियों को भारी परेशानियों से गुजरना पड़ता है। प्रशासन का मानना है कि आधुनिक स्तर का बस टर्मिनस के निर्माण से यात्रियों को ऐसी परेशानियों से निजात मिलेगी। सिटी सेंटर में जगह की कमी के कारण अधिक बसों का ठहराव नहीं हो पाता है।

पृष्ठ 2 का शेष आसान नहीं बंगाल में शांतिपूर्ण मतदान करना

देने की विभत्स घटना भी घटी थी। हिंसा फैलाने का आरोप सत्तारूढ़ दल तृणमूल कांग्रेस पर लगा था। कहा जाता है कि सत्तारूढ़ दल के आतंक से विपक्षी दलों के उम्मीदवार नामांकन तक दाखिल नहीं कर पाये और त्रिस्तरीय पंचायत में 20 हजार से अधिक सीटों पर सत्तारूढ़ दल के उम्मीदवार निर्विरोध जीत गए। मामला कोलकाता हाई कोर्ट से होकर सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचा। भाजपा और माकपा

ने तो सुप्रीम कोर्ट में पंचायत चुनाव को रद्द कराने की अपील की थी। यह बात अलग है कि सुप्रीम कोर्ट ने पंचायत चुनाव रद्द करने का फैसला नहीं सुनाया, चुनावी हिंसा और धांधली पर चिंता जताई थी। वाममोर्चा के 34 वर्ष के शासन में भी चुनाव हिंसा का रिकार्ड कम विभत्स नहीं है। माकपा ने तो चुनावी धांधली का वैज्ञानिक तरीका निकाल लिया था, जिसमें विपक्षी दलों के समर्थकों को

वोट देने का मौका भी नहीं मिलता था। वाममोर्चा के शासन में चुनावी हिंसा में खूनी खेल से लेकर एक कांग्रेस कार्यकर्ता के हाथ काट लेने का उदाहरण मौजूद है। वाममोर्चा के शासन में ही सीआरपीएफ के एक वरिष्ठ अधिकारी ने चुनावी धांधली रोकने में हस्तक्षेप किया तो माकपा समर्थित महिलाओं ने उनपर दुर्व्यवहार और छेड़खानी का आरोप लगा दिया था।

The Dy. Commissioner of police (HQ), Asansol Durgapur invites sealed tender for "Lok Sabha General Election" 2019 from the Government registered/Department enlisted suppliers/ Decorater/ Traders etc. For the Hiring/supply/installation of febricated temporary sheds, chairs, tables, Mikeset, Generator, Lights, pandal misc articles ect. and others in c/w lok sabha General Election 2019 for the Asansol Durgapur Police Commissionerate. Samples, list of articles and other details of tender may collect from the office of the undersigned on any working day during office hour. Tender forms may be obtained from the office of the undersigned on payment of Rs,10/- (ten) only through T.R Challans for each tender. Attested copies of income tax and sales tax clearance certificates, P. tax certificates, trade license, GST documents shall be submitted along with tender papers in the tender box placed at this office. The tenders will be opened shortly after that, interested bidders may remain present during opening of tender papers. The last date of submitting tender paper is 19.03.2019 by 12 hrs. The tender paper will be opened on 19.03.2019 at 16.00hrs. Interested bidders may be remain present during opening of the tender papers. The earnest money Rs.10,000/- (ten thousand) only as NSC, KYP bankers cheque must be submitted along with the tender form.. The tender without the above mentioned copies of certificate will be rejected abinitio. Authority possessed every right to accept or reject any tender without assigning any reason.

Email.id- riadpc@gmail.com

छात्राओं ने बनाई ऐसी डिवाइस जो साउंड पॉल्यूशन से बिजली उत्पन्न करेगी

नीति आयोग द्वारा अक्टूबर 2018 में ऑनलाइन प्रतियोगिता कराई जिसमें 50 हजार में 200 मॉडल चुने गए

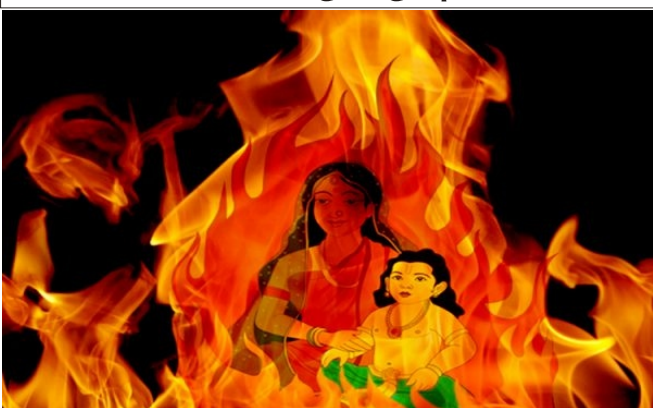
गंतव्य ब्यूरो (रांची) : साउंड पॉल्यूशन से अब बिजली का उत्पादन किया जा सकेगा। शोर-शराबे से परेशान महानगर अब स्ट्रीट लाइट और ट्रैफिक सिग्नल जलाने में अब इसका इस्तेमाल कर सकेंगे। यह आविष्कार खूटी के डीएवी स्कूल की दो छात्राओं ने किया है। खुशी रानी और अकांक्षा साहा ने ऐसी डिवाइस बनाई है, जो तेज आवाज को तुरंत ऊर्जा में बदल देती है। सड़कों पर यह डिवाइस काफी कारगर है। यह वाहनों की तेज ध्वनी और हॉर्न को लगातार बिजली में परिवर्तित करती रहेगी। नीति आयोग ने अक्टूबर 2018 में यह ऑनलाइन प्रतियोगिता कराई थी जिसमें विभिन्न जगहों से छात्र-छात्राओं ने 50 हजार मॉडल भेजे थे। जिनमें देशभर के सर्वश्रेष्ठ 200 मॉडल को चुना गया। इनमें खूटी की दोनों छात्राओं का मॉडल भी सलेक्ट हुआ है। लड़कियों द्वारा बनाए इस डिवाइस की खास बात यह है कि यह थोड़ी सी आवाज के प्रति



भी संवेदनशील है। यानी सिर्फ ताली बजाने से ही डिवाइस एक्टिव हो जाता है और ऊर्जा पैदा करना शुरू कर देता है। डीएवी के प्रिंसिपल टी पी झा ने बताया कि महानगरों में अत्यधिक ध्वनी प्रदूषण से इंसानों के साथ पशु-पक्षियों पर भी काफी दुष्प्रभाव पड़ रहा है। ऐसे में यह आविष्कार ऊर्जा उत्पादन और संरक्षण को बढ़ावा देने में काफी मददगार साबित होगी। इस प्रतियोगिता में देश भर के उन स्कूलों के छात्र-

छात्राओं ने भाग लिया जिनके पास, अटल टिकरिंग लैब है। सरकार के अटल इनोवेशन मिशन के तहत नीति आयोग ने बच्चों में वैज्ञानिक सोच पैदा करने के लिए इन लैब्स को देश के कई स्कूलों में बनाया है। डीएवी के फिजिक्स टीचर एम गौरी शंकर और जे बी मलिक ने बताया कि खुशी और अकांक्षा ने अपने मॉडल से ऊर्जा उत्पादन की एक नई राह दिखाई है। इसमें अटल टिकरिंग लैब्स महत्वपूर्ण

होली 2019 का शुभमुहूर्त के साथ ही उसकी कथा



गंतव्य मुम्बई (ब्यूरो) : रंगों का पर्व होली 21 मार्च को पूरे देश में हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। इससे पहले 20 मार्च को होलिका दहन किया जायेगा इसे छोटी होली और होलिका दीपक भी कहते हैं। बुराई पर अच्छाई की जीत के इस पर्व को देश भर में बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। दशहरा की तरह होली भी बुराई पर अच्छाई की जीत का

को रंग लगाकर होली की शुभकामनाएं दी जाती है साथ ही होता है नाच, गाना और स्वादिष्ट व्यंजन। प्रचलित कथा के अनुसार हिरणकश्यप अपने विष्णुभक्त बेटे प्रहलाद की हत्या करना चाहता था। इसके लिए वो अपनी बहन होलिका की भी सहायता लेते हैं। दरअसल अत्याचारी हिरणकश्यप ने तपस्या



पर्व है, होली को लेकर हिंदू धर्म में कई कथाएँ प्रचलित हैं और सभी में बुराई को खत्म करने के बाद जश्न मनाने के बारे में कहा गया है। होली से पहले होलिका दहन के दिन पवित्र अग्नी जलाई जाती है जिसमें सभी तरह की बुराई, अहंकार और नकारात्मकता को जलाया जाता है। परिजनों और दोस्तों

कर भगवान ब्रम्हा से अमर होने का वरदान पा लिया था, वरदान में उसने मांगा था कि कोई जीव-जंतु, देवी-देवता, राक्षस या मनुष्य रात, दिन, पृथ्वी, आकाश, घर या बाहर मार ना सके। इस वरदान से घमंड में आकर वह चाहता था कि हर कोई उसकी ही पूजा करे, लेकिन उसका बेटा भगवान

विष्णु का परम भक्त था। उसने प्रहलाद को आदेश दिया कि वह किसी और की स्तुति ना करे, लेकिन प्रहलाद नहीं माना। प्रहलाद के ना मानने पर हिरणकश्यप ने उसे जान से मारने का प्रण लिया। प्रहलाद को मारने के लिए उसने अनेकों उपाय किए, लेकिन वह हमेशा बचता रहा। उसने अग्नी से बचने का वरदान प्राप्त बहन होलिका के संग प्रहलाद को आग में जलाना चाहा, लेकिन इसबार भी बुराई पर अच्छाई की जीत हुई और प्रहलाद बच गया, लेकिन उसकी बुआ होलिका जलकर भष्म हो गई। तभी से होली का त्यौहार मनाया जाने लगा। इस त्यौहार को लेकर देश भर में बच्चे, बुढ़े जवान, महिलाओं में काफी हर्ष देखने को मिलती है। इस वर्ष होलिका दहन के लिए शुभ मुहूर्त रात 8:58 से 11:34 तक का है।

अगर वर्ल्ड कप में विराट का बल्ला चला तो भारत बनेगा विश्व विजेता : रिकी पोंटिंग



गंतव्य खेल संवाददाता : ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ घरेलू वनडे सीरीज हारने के बाद भारतीय टीम की कोशिश अपनी गलतियों से सबक लेने की होगी। ऑस्ट्रेलियाई दिग्गज रिकी पोंटिंग अभी भी भारत को वर्ल्ड कप जीतने का दावेदार मानते हैं। रिकी पोंटिंग के मुताबिक वर्ल्ड कप में भारतीय टीम पूरी तरह से अपने कप्तान विराट कोहली पर निर्भर करेगी। क्रिकबज को दिए साक्षात्कार में पोंटिंग ने विराट कोहली और भारतीय टीम को लेकर अपनी बात रखते हुए पोंटिंग ने कहा कि 'विराट का वनडे रिकार्ड शानदार रहा है, अगर वर्ल्ड

कप के दौरान उनके बल्ले ने विराट का साथ दिया तो वे भारत को खिताब दिला सकते हैं। कोहली के आंकड़े दर्शाते हैं कि वो दूसरे खिलाड़ियों की तुलना में कितने आगे और बेहतर हैं। इतनी कम उम्र में इस तरह की उपलब्धि को हासिल करना काबिले तारीफ है। उम्मीद है वो इस काम को जारी रखेंगे। वहीं आईपीएल 2019 का आगाज 23 मार्च से हो रहा है। इस टूर्नामेंट के पहले मैच में घोनी की टीम चेन्नई सुपर किंग्स की भिरंत विराट कोहली की रॉयल चैलेंजर्स से चेन्नई में होगी।

Sealed Lok Sabha Election Tender 2019 are invited from the Bonafied /Government Registered/Departmental/ Enlisted Suppliers / Contractors / Co-Operative Society Ltd. For Supplying "Stationery, Printing & Miscellaneous" articles for the year 2019 of Asansol Durgapur Police Commissionerate.

The sealed tenders should be addressed to the Dy.Commissioner of Police (HQ), Asansol Durgapur Police Commissionerate "Tender for supplying of "stationery printing & Miscellenous" items on the top of the cover and the name of the firm at the bottom of the same.

Details of the tender may be seen in the office of the undersigned on any working day during office hours. Tender form may be obtained from the office of the undersigned on payment of Rs.100/- (One hundred) only through treasury challan.

Earnest money amounting of Rs.10,000/- only in the shape of govt Draft or NSC in favour of Dy.Commissioner of police (HQ), Asansol Durgapur Police Commissionerate should be enclosed with the tenders along with the up-to-date copies of documents i.e.I.T return. P.Tax Trade license,GSIN etc. Tender will be received by this office by 23.03.2019 at 12.30 hrs and will be opened on the same day after 12.30 hrs. The quoted rate should not cross the justified market price. Bidders are requested to remain present during opening of tender box. The undersigned reserves the right to accept or cancel the tender without assigning any reason.

Email. Id - (www.asansoldurgapurpolice.in)

Dy. Commissioner of Police (HQ),
Asansol - Durgapur.

Memo No. 244/2019 E.I.DICO/Paschim Bdn Advt. No. 475E/18/5/3m-Dm. Date. 18/3/19